International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-5 Sep - Oct – 2022 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

वर्तमान प्रवृत्तियों में मूल्य शिक्षा का समावेशशिक्षा में एक प्रमुख कारक है।

Satbir singh
Research Scholar
Deptt. of Education
Malvanchal University
Indore (M.P.)

Dr. Ritu Bhardwaj
Research Supervisor
Deptt. of Education
Malvanchal University
Indore (M.P.)

प्रस्तावना :

21वीं सदी के लिए उच्च शिक्षा बहुआयामी अवधारणाएं हैं और उच्च शिक्षा में संस्थान को समुदायों और वैश्विक समाजों की भलाई को प्रभावित करने वाले मुद्दों की पहचान करने और उन्हें संबोधित करने में भूमिका निभानी चाहिए। मूल्य उन सिद्धांतों या मानकों को साझा करते हैं, जो जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। मूल्य व्यवहार के क्या करें और क्या न करें को संहिताबद्ध करते हैं। चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास के आधार का रूप। वे मूल्य जो वसंत के भीतर या दिल के मूल में बनते हैं, जैसे प्रेम करुणा, सहानुभूति , सहिष्णुता आदि ईमानदारी, अनुशासन, समय की पाबंदी और वफादारी जैसे बाहरी अभ्यास मूल्यों की नींव रखते हैं। आज की तेज गति वाली प्रतिस्पर्धी दुनिया में, ऐसा लगता है कि भौतिक धन का अधिक से अधिक उपयोग करने और रखने के लिए बोली में मनुष्य ने अपने मूल्यों, ईमानदारी और चरित्र से समझौता किया है। परिणामस्वरूप हम बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार, गैरकानूनी गतिविधियों, अमानवीय व्यवहार और अनैतिक उपभोग को देखते हैं जो धीरे–धीरे हमारे समाज, राष्ट्र और दुनिया की संरचना को तोड़ रहा है। इसलिए विशेष रूप से मानवीय मूल्यों से संबंधित मूल्य आधारित आध्यात्मिक शिक्षा को फिर से शुरू करने की तत्काल आवश्यकता है। हमारी शिक्षा प्रणाली के ताने–बाने को नया स्वरूप देने के लिए, एक बच्चे का दिमाग नरम मिट्टी की तरह होता है और इसे किसी भी इच्छा आकार में ढाला जा सकता है इस प्रकार मूल्य शिक्षा प्रदान करने का यह सही समय और उम्र है ताकि बच्चे के मन में बनी सही छाप जीवन भर उसका मार्गदर्शन करे। ऐसा जीवन निश्चित रूप से नैतिक और न्यायपूर्ण सिद्धांतों पर आधारित होगा। स्कूल विभिन्न पृष्ठभूमि से आने वाले सभी बच्चों के लिए एक साझा मंच है।

स्कूल एक ऐसा स्थान है जहाँ सक्रिय और सीखने के माहौल में, बच्चा अधिकतम आठ घंटे बिताता है। उसे अनुभव कराकर और मूल्यों को जीकर उसमें मानवीय मूल्यों को आसानी से जगाया जा सकता है।

सम्बन्धित साहित्य :

मूल्यपरक शिक्षा पर शासन द्वारा आयोजित उन्मुखीकरण कोर्स में प्राप्त निष्कर्षों का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य :–

नैतिक मूल्यों के पतन के कारणों को जानना

नैतिक मूल्य और शिक्षा के सम्बन्ध को समझना

शोध प्रविधि :– प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

वर्तमान प्रवृत्तियों में मूल्य शिक्षा का समावेश शिक्षा में एक प्रमुख कारक है

मूल्य शिक्षा की परिभाषा बच्चे को उसके हर पहलू के अनुरूप बनाना है आध्यात्मिक, शारीरिक, भावनात्मक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक होने के नाते ताकि उनके व्यक्तित्व को समग्र रूप से विकसित किया जा सके। मूल्य सद्गुण, आदर्श और गुण हैं जिन पर क्रिया और विश्वास आधारित होते हैं। मूल्य मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो हमारे विश्व दृष्टिकोण और आचरण को आकार देते हैं। हालाँकि मूल्य या तो जन्मजात या अधिग्रहित होते हैं। जन्मजात मूल्य हमारे जन्मजात दिव्य गुण हैं जैसे प्रेम, शांति, खुशी, प्रमुदित और करुणा के साथ–साथ सकारात्मक नैतिक गुण जैसे सम्मान विनम्रता, सहनशीलता जिम्मेदारी सहयोग ईमानदारी और सरलता इत्यादि।

होगन (1973) का मानना है कि मनोबल पांच कारकों द्वारा निर्धारित होता है।

1. समाजीकरण– बच्चे का समाजीकरण होना जरुरी है। समाजीकरण में बच्चा समाज व माता–पिता के आचरण का अनुसरण करता है।

2. नैतिक निर्णय – अपनी स्वयं की नैतिकता के बारे में यथोचित रूप से सोचना सीखना और जानबूझकर अपने नैतिक मानकों पर निर्णय लेना।

3. नैतिक भावनाएँ – हमारे नैतिक विश्वासों का आंतरिककरण इस हद तक कि हम शर्म और ग्लानि महसूस करते हैं जब हम वह करने में विफल होते हैं जो हमें करना चाहिए।

4. सहानुभूति – अन्य लोगों की स्थिति, भावनाओं और जरूरतों के बारे में जागरूकता ताकि एक जरूरतमंद लोगों की मदद करने के लिए पूरा हो सके।

5. आत्मविश्वास और ज्ञान – दूसरों की मदद करने और यह विश्वास करने में शामिल कदम कि कोई व्यक्ति मदद करने के लिए जिम्मेदार और सक्षम है।

भारत में मूल्य शिक्षा

भारत में प्राचीन काल से मूल्य शिक्षा का प्रमुख स्थान रहा है। गुरुकुल मंच से बच्चे ने न केवल पढ़ने और तीरंदाजी के कौशल सीखे बल्कि जीवन की नश्वरता के संबंध में और भी अधिक दर्शनशास्त्र सीखा है। इसलिए भारत में शिक्षा का जन्म परमात्मा की चिंगारी के रूप में पूर्ण रूप से किसी के अनुभव को प्राप्त करने के लिए इस दृष्टि से हुआ था और इस प्रक्रिया में किसी के कर्तव्य का अभ्यास ज्ञान के अधिग्रहण के साथ होता है। आधुनिक विद्यालय प्रणाली में मूल्य शिक्षा को नैतिक शिक्षा और नैतिक विज्ञान की संज्ञा दी गई। भारत में आज के अधिकांश स्कूल स्कूली शिक्षा के माध्यम से मूल्य शिक्षा प्रदान करते हैं। जबकि निजी स्कूल मूल्य शिक्षा पर कक्षावार पुस्तकों के माध्यम से मूल्य शिक्षा प्रदान करते हैं। अन्य स्कूल कार्यक्रम में विशेष समय पर मूल्य शिक्षा प्रदान करते हैं जैसे विधानसभा, त्योहार आदि विशेष विषयों और मूल्य शिक्षा के विषयों पर गतिविधियों के माध्यम से। राष्ट्रीय एकता, चरित्र निर्माण आदि।

विद्यालय में मूल्य शिक्षा–

विद्यालय में मूल्य शिक्षा के महत्व को कई सिद्धांतों द्वारा रेखांकित किया गया है। स्कूल में मूल्य शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है? अक्सर शिक्षक बच्चों को मूल्य शिक्षा का अर्थ समझाते हैं। मूल्य शिक्षा घर से शुरू होती है और स्कूल में विकसित होती है। मूल्य शिक्षा पर उद्धरण वाली कहानियाँ बच्चों को मूल्य शिक्षा के विषय को समझने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। बच्चों, छात्रों और सभी उम्र के बच्चों के लिए मूल्य शिक्षा के कई वीडियो भी उपलब्ध हैं। वर्तमान समय में वैल्यू एजुकेशन बुक, गतिविधियां भी स्कूलों में पाठ्यक्रम का हिस्सा हैं।

अध्यापक की भूमिका–

शिक्षक, अनुकरण किए जाने के लिए स्वयं को रोल मॉडल के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मूल्य शिक्षा प्रदान करने का मूल दृष्टिकोण 'प्रेम' है। मूल्य शिक्षा को तीन तरीकों से लागू करने के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। स्वतंत्र दृष्टिकोण, एकीकृदृष्टिकोण और सूक्ष्म दृष्टिकोण।

शिक्षक निम्नलिखित भूमिकाएँ निभाता है

– मूल शिक्षा में अनुसन्धान कार्य करके

– प्रेरणा संगोष्ठी

– कक्षा–कक्ष में चर्चा

– लघु और दीर्घ अवधि प्रशिक्षण द्वारा

आज हम आतंकवाद, गरीबी और जनसंख्या जैसी कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं। पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों का समावेश आवश्यक है। शिक्षा एक प्रभावी हथियार है जिसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि कौन इसे धारण करता है और किस पर इसका लक्ष्य है। अधिग्रहीत मूल्य वे बाहरी मूल्य हैं जो आपके 'जन्म स्थान' या 'ग्रौथ के स्थान' पर अपनाए जाते हैं और तत्काल पर्यावरण अधिग्रहीत मूल्यों के उदाहरण हैं किसी की पोशाक का तरीका, जिस तरह से आप आशीर्वाद देते हैं, सांस्कृतिक रीति–रिवाज, परंपराएं, आदतें और रुझान से प्रभावित होते हैं।

नैतिक पतन के मुख्य कारण

–परिवारों में बच्चों के माता–पिता के नियंत्रण का टूटना।

–अधिकार के प्रति सम्मान की कमी, कानून की बेशर्मी से तोड़कर और नियमों और विनियमों के लिए पूर्ण अवहेलना के माध्यम से देखा जाता है।

–अपराध और भ्रष्टाचार।

–मानव जीवन की पवित्रता के लिए सम्मान की कमी।

–शराब और नशीली दवाओं का दुरुपयोग।

–अन्य लोगों और संपत्ति के लिए सम्मान की कमी।

इन सभी प्रकार की समस्याओं को हल करने के लिए उपरोक्त समस्याओं के मुख्य कारणों को जानना आवश्यक है। हम जानते हैं कि आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। यदि हम वर्तमान समय के बच्चों को अच्छी शिक्षा देंगे तो आने वाली पीढ़ी का भविष्य अच्छा होगा। मेरी राय में शिक्षा सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान है। अब हम आधुनिक सदी में जी रहे हैं। अगर हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी का सही तरीके से उपयोग करें तो हमारे लिए अनैतिक और मूल्यहीन चीजों की सभी समस्याओं को हल करना मुश्किल नहीं है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्कूलों और कॉलेजों में नैतिक और मूल्य आधारित शिक्षा को विकसित करना और इंटरमीडिएट के छात्रों के नैतिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण को जानना है।

सुझाव– उदारीकरण, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण के कारण सभी सामाजिक विज्ञानों में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। प्राप्त मूल्यों और परिवर्तनों के अनुसार उनके दृष्टिकोणों को आज तक जाना जाना चाहिए जब तक कि शिक्षा में बड़े पैमाने पर परिवर्तन हो रहे हैं। भारत के तथाकथित दार्शनिक आधार सामाजिक अशांति की स्थिति में देश के साथ दिन–प्रतिदिन गिर रहे हैं, औपचारिक शिक्षा के

लक्ष्यों और कार्यों का पुनर्मूल्यांकन और अद्यतन करने की आवश्यकता है। शिक्षा के माध्यम से हम दुनिया को बदल सकते हैं।

पाठ्यचर्या में नैतिक मूल्यों को स्थान देकर

नैतिक मूल्यों को कहानियों और दृष्टांतों के माध्यम से समझाया जा सकता है।

पाठ में एक अच्छी कहानी की भूमिका निभाएं द्य

समाज में नैतिक मूल्यों को विकसित करने के लिए छात्रों को पाठ्यक्रम प्रशिक्षण देना।

कक्षा की गतिविधियों में भागीदारी – शिक्षक का व्यवहार कक्षाकक्ष में वातावरण पर अधिगम वातावरण के प्रतिमान को निर्धारित करता है। यदि शिक्षक हावी है, तो वह अपनी कक्षा में छात्रों की भागीदारी के पक्ष में नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

नरूला एंड नायक – हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इंडिया पृ. 92

के सी सेन – प्रमोशन ऑफ एजुकेशन इन इंडिया पी एस बसु सं

मूल्यपरक शिक्षा पर शासन द्वारा आयोजित उन्मुखीकरण कोर्स में प्राप्त निष्कर्षों का अध्ययन।